

भाग
1

भारतीय भाषा साहित्य

(विविध संदर्भ)



संपादक
डॉ. राजेन्द्र यादव

ISBN : 978-93-81480-98-4

प्रकाशक : विजया बुक्स

1/10753 सुभाष पार्क, गली नं. 3

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

फोन : 011-22822514; 9910189445

Email : vijyabooks@gmail.com

rajeev02sharma@gmail.com

© : लेखक

प्रथम संस्करण : 2016

मूल्य : 650/-

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

संपादकीय

लगातार दो बार हिन्दी विभाग की ओर से पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के आयोजन का प्रस्ताव एच.आर.डी.सी. सागर, मध्य प्रदेश को मैंने भेजे, जिसके उपरान्त 'तुलनात्मक भारतीय' साहित्य विषय पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम की अवधि के दौरान हिन्दी, संस्कृत, मराठी व अन्य भाषा एवं साहित्य के ख्यातिलब्ध राष्ट्रीय स्तर के विद्वान, हिन्दी विभाग, डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) सागर, मध्य प्रदेश के नेतृत्व में हिन्दी विभाग अध्यक्ष प्रो. चन्दा बैन और मेरे आग्रह पर विश्वविद्यालय में आये और उन्होंने पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों को अपने महत्वपूर्ण व्याख्यान से लाभान्वित किया।

इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन जिन विद्वानों की विषय मर्मज्ञता से सफल हुआ, उनमें क्रमशः केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के निदेशक और भारतीय साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के वरिष्ठ प्रोफेसर, गजलकार-गीतकार, एवं सम्पादक प्रोफेसर वशिष्ठ अनूप, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवाँ, मध्य प्रदेश के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर दिनेश कुशवाहा, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के हिन्दी विभाग अध्यक्ष प्रो. कालीचरण 'सनेही', वरिष्ठ कथाकार एवं रीतिकालीन साहित्य के आधुनिक व्याख्याकार डॉ. उदयन वाजपेयी, समकालीन हिन्दी कविता के वरिष्ठ कवि राजेश जोशी, हिन्दी सिनेमा के सशक्त समीक्षक श्री संतोष पठारे (मुम्बई), इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के दलित साहित्य के मान्य आलोचक डॉ. भूरालाल,

उत्तर राम प्रसंग : एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

‘राम का जीवन दो विरोधी नियतियों के संतुलन से निर्मित हुआ है। जीवन का पूर्वाध भारतीय जन मानस के लिए आस्था का चरम रूप है तो वहीं उनके जीवन का उत्तरार्ध समाज, साहित्य, लोक और संस्कृति में सर्वाधिक आलोचना का विषय रहा है।’ राम के इस जीवन को आधार बनाकर भारतीय साहित्य में बहुत लिखा गया है, और उसमें से कुछ तो श्रेष्ठता का पर्याय ही हो गया है। राम कथा का आदि स्रोत बाल्मीकि रामायण है, किन्तु प्रत्येक युग के रचनाकार अपनी नई व्याख्या के साथ अपनी-अपनी राम कथा लेकर उपस्थित होते रहे हैं। ‘साहित्य ने राम के जीवन और चरित्र को कैसे समझा इसके लिए भवभूति का ‘उत्तररामचरितम्’ कैफी आजमी की कविता ‘दूसरा वनवास’, बोधिसत्व की कविता ‘शान्ता’ और भारत भूषण की ‘कविता राम की जल समाधि’ को देखा जा सकता है। इन सभी रचनाओं में राम अपने देवत्व के साथ नहीं बल्कि समस्त मानवीय विडम्बनाओं के साथ आते हैं। यही राम लोक के ज्यादा नजदीक हैं। इसी राम को लोक ठीक से जानता और मानता है, इसी राम से आग्रह, अनुग्रह और शिकायत करता है। कृपा भी इन्हीं से और अपने सवालियों के जबाब भी नहीं से माँगता है। इसी राम में देवत्व के लक्षण भी है और यही राम लांक्षित भी है।’ समाज और साहित्य में राम के मूल्यांकन की दो दिशाएँ रही हैं। पहली दिशा राम के जीवन के पूर्वाद्ध से होकर जाती है जिसमें रावण मारा जाता है और दूसरी शिक्षा उनके जीवन के उत्तरार्ध से होकर गुजरती है जिसमें सीता निर्वासन, शान्ता की उपेक्षा और शम्बूक की हत्या

है। राम के जीवन को पूर्वाद्ध राम का रामत्व है तो उत्तरार्ध राम का राजत्व। ‘बोधिसत्व की कविता ‘शान्ता’, कैफी आजमी की कविता ‘दूसरा वनवास’ और भारत भूषण की कविता ‘राम की जल समाधि’ राम के इसी उत्तर जीवन को अपना आधार बनाती हैं। किन्तु राम के उत्तर जीवन के आलोचनात्मक पाठ की पृष्ठभूमि के रूप में आठवीं शताब्दी की रचना ‘उत्तररामचरितम्’ को माना जा सकता है।’

राम के इस उत्तर जीवन को प्रभावशाली ढंग से साहित्य का विषय भवभूति ने बनाया। ‘उत्तररामचरितम्’ में राम के उत्तर जीवन की कथा है। इस ‘उत्तर’ विशेषण प्रिय समय में इस ग्रन्थ का शीर्षक भी खासा रोमांचक है। जैसा कि कथा के साक्ष्य बताते हैं कि यह राम के राज्याभिषेक के बाद सीता निर्वासन और मिलन की कथा है। हम सब जानते हैं कि राम अपने जीवन के पूर्वाद्ध में अपने ‘रामत्व’ के लिए संघर्ष करते हैं और उत्तरार्द्ध में उसी रामत्व को खोते रहते हैं। एक ही जीवन में एक ‘चिरागी व्यक्ति’ को अर्जित करने और फिर उसी चिराग के नीचे से उपजे अंधेरे में घिरते चले जाने का नाम ‘राम’ है।’ रामायण की मूल कथा दुखान्त है पर भवभूति ने इसे सुखान्त कर दिया है। आरंभ से अन्त तक इस ग्रन्थ में सीता निर्वासन और शम्बूक बध की अनुगूँज व्याप्त है। ये दोनों प्रसंग रामत्व के समक्ष एक बड़ी चुनौती है। भवभूति आरम्भ में ही सीता निर्वासन का संकेत दे देते हुए कहते हैं कि-

सर्वथा व्यवहर्तव्यं, कुतो ह्यवचनीयता।

यथा स्त्रीणां तथा वाचां सम्युत्वे दुर्जनो जनः।।’

अर्थात् ‘हमेशा सर्वात्मना व्यवहार करते रहना चाहिए, दोषहीन होने की सम्भावना कैसे की जा सकती है। क्योंकि दुर्जन जैसे स्त्रियों के चरित्र के विषय में शंका करता है, वैसे ही निर्दोष जनों के विषय में भी दोष निकालने का प्रयत्न करता है।’ यहाँ भवभूति सीता निर्वासन का संकेत तो देते ही हैं साथ ही सीता के निन्दकों को दुर्जन कहकर अपना पक्ष स्पष्ट कर देते हैं। उधर नये राज्य के नये राजा राम अपने गुरु वसिष्ठ को आश्वस्त करते हैं कि “लोक की अराधना के लिए मुझे स्नेह, दया, दुःख, (यहाँ तक कि) जानकी को भी छोड़ते हुए कोई व्यथा नहीं होगी।”²